''२१ वी सदी के हिंदी उपन्यासों में चित्रित थर्ड जेंडर की समस्याएँ''

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड

मानव्य विद्या संकाय के अंतर्गत पीएच्. डी (हिंदी) उपाधि.
हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबंध की रूपरेखा

शोधकर्ता

सुश्री. सरिता बाबासाहेब बिडकर

शोध निर्देशक

डॉ. सविता चोखोबा किर्ते
हिंदी विभागाध्यक्ष
श्रीमती सुशिलादेवी वरिष्ठ महाविद्यालय, लातूर

अनुसंधान केंद्र

दयानंद कला महाविद्यालय, लातूर

मे-२०१९

भूमिका:

स्वातंत्र्योत्तर भारतीय जीवन काफी तेज गति से बदल रहा है। और यह परिवर्तन साहित्य में भी पाया जाता है। कहना गलत नहीं होगा स्वतंत्रता के बाद हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श, वृद्ध विमर्श तथा मुस्लिम विमर्श जैसी नयी–नयी विचाराधाराओं को पाठकों के सामने प्रस्तुत करने का काम हिंदी साहित्य कर रहा है। अत: यह बदल २१ वीं सदी के हिंदी उपन्यासों में अत्यंत सजग रुप से दिखायी देता है। उपेक्षित जनसमुदाय को वाणी देने की अहम् भूमिका हिंदी साहित्य निभा रहा है। ऐसा ही एक उपेक्षित जनमुदाय– थर्ड जेंडर यानि तृतीयपंथी समाज है। स्त्री–पुरुष यह समाज के दो महत्त्वपूर्ण वर्ग है किंतु एक ऐसा वर्ग है जो न पुरुष है, न स्त्री है– वह तिसरा वर्ग है, जिसे तृतीयपंथी के रूप में पहचाना जाता है। हमारे इस समाज में जितना महत्त्व स्त्री–पुरुष को मिलता है उतना महत्त्व तृतीय पंथियों को नहीं मिलता। समाज, परिवार, सरकार सभी जगह यह उपेक्षित रह जाते है। यहाँ तक कि उनका अस्तित्व ही नहीं माना जाता है। अत: साहित्य के द्वारा साहित्यकार समाज से संवाद स्थापित करता है और समाज की समस्याएँ साहित्य के पटल पर उभारता है।

जब शोध छात्रा के रूप में मेरा चयन हो गया तो मेरा मन– थर्ड जेंडर का जीवन उनका संघर्ष, उनकी समस्याएँ इस तरफ आकर्षित हो गया। अत: उस दृष्टि से मेरा काम शुरू हो गया।

२१ वी सदी का प्रथम तथा द्वितीय दशक थर्ड जेंडर का जीवन तथा उनकी समस्या ओं के लिए याद किया जाएगा। थर्ड जेंडर का जीवन, उनका संघर्ष ,उनकी अवहेलना को ध्यान में रखकर, यमदीप, मैं पायल, जिंदगी ५०–५०, मैं भी औरत हूँ, किन्नर कथा, तीसरी ताली, गुलाम मंडी, पोस्टर्ट बॉक्स नं. २०३ नाला–सोपारा, जैसे महत्त्वपूर्ण उपन्यास लिखे गए। अत: उनके जीवन को समझना, उनकी समस्याओं को जानाना, खोजना मुझे जरूरी लगा। और इसी बात को ध्यान में रखकर मैंने २१ वीं सदी के हिंदी उपन्यासों में चित्रित थर्ड जेंडर की समस्याएँ यह विषय पीएच.डी. उपाधि हेतु शोधकार्य के लिए चुना और मार्गदर्शिका प्रा. डॉ. सविता किर्ते जी से बात की। अंत में आपसी विचार–विनिमय के बाद प्रस्तुत विषय का चयन हो

गया।

शोधकार्य का उद्देश (Objectives of Research)

हमारे समाज के दो स्तंभ महत्त्वपूर्ण माने जाते है एक स्त्री और दुसरा पुरुष । इस समाज का विकास इन दोनों के सहारे ही हो रहा है। लेकिन इन दो लोगों के अलावा और एक लिंग है– जिसे तृतीय लिंग कहते है । लेकिन यह वर्ग उपेक्षित है। अत: ऐसे समाज की समस्या जानना, उसपर समाधान ढूँढना इस शोध कार्य का महत्त्वपूर्ण उद्देश है। साथ ही २१ वी सर्दी के हिंदी उपन्यासों में थर्ड जेंडर की समस्याओं का विश्लेषण करना। किस तरह उन्हे समाज मे अपमान, पीडा, शोषण, अवहेलना तथा त्रासदी का सामना करना पडता है। इसपर प्रकाश डालना । कुलमिलाकर थर्ड जेंडर के जीवन का विश्लेषण करना, समस्याएँ स्पष्ट करना इस शोधकार्य का प्रमुख उद्देश्य है।

पूर्वमान्यताएँ (Hypothesis)

बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में और २१ वीं सदी के शुरूवात में हिंदी साहित्य जगत में दलित विमर्श, स्त्री विमर्श, मुस्लिम विमर्श, वृद्ध विमर्श जैसे विषय उभरकर सामने आने लगे। इसी विमर्श के साथ एक और विमर्श की भी चर्चा होने लगी और वह विमर्श है– थर्ड जेंडर विमर्श। थर्ड जेंडर को लेकर वर्तमान समय में नीरजा माधव, चित्रा मुदगल, प्रदीप सौरभ, महेंद्र भीष्म, निर्मला भूराडिया लेखन करने लगे, उनके जीवन को प्रस्तुत करने लगे।

कहा जाता है कि महाभारत के अर्जुन भी अपने जीवन का एक साल किन्नर का रूप धारण कर चुके है। साथ ही किन्नरों का उपयोग विशेष तौर पर अंत:पुर में भी किया जाता है। अत: २१ वीं सदी में थर्ड जेंडर पर उनके जीवन संघर्ष को लेकर, उनकी समस्याएँ आदि पर चर्चा हो रही है।

शोध–कार्य का स्वरूप, व्याप्ति और मर्यादाएँ (Data, Scope & Limitation)

थर्ड जेंडर, उभयलिंगी, हिजडा, तृतीय लिंगी, शीखंडी, किन्नर इस तरह के नामों से तृतीय पंथी को जाना जाता है। थर्ड जेंडर का जीवन बेहद दयनीय होता है, जन्म से लेकर मृत्यु तक उन्हें समस्या और समस्याओं से ही गुजरना पडता है। उनके जीवन पर सोचना–विचार

करना, उनकी समस्याओं को पाठकों के सामने रखने का काम २१ वीं सदी के कुछ प्रमुख उपन्यास कर रहे है जिसमें यमदीप, किन्नर कथा, गुलामंडी, तीसरी ताली, पोस्ट बॉक्स नं २०३ नालासोपारा, मैं भी औरत हूँ, मैं पायल, जिंदगी ५०-५० जैसे उपन्यास कर रहे है।

आज समाज में लिंग-भेद को लेकर जो समस्याएँ है, विषमता है यह मिटाकर समानता निर्माण हो इस उददेश्य से, हिंदी उपन्यासों के माध्यम से यह उददेश्य पूरा किया जाएगा। इस शोध कार्य को सुचारू रूप से संपन्न करने हेतु तथा सुविधा हेतु प्रस्तुत विषय को अलग-अलग अध्यायों में विभाजित करके अध्ययन किया जाएगा।

अत: ''२१ वीं सदी के हिंदी उपन्यासों में चित्रित थर्ड जेंडर की समस्याएँ'' यही मेरे शोध-कार्य का प्रमुख उद्देश्य रहेगा। अन्य विधाएँ तथा अन्य तत्व मेरे शोध कार्य का उद्देश्य नहीं होंगे। प्रस्तुत विषय ही मेरे शोध-कार्य का प्रमुख उद्देश्य रहेगा। इसके सिवाय दूसरा विषय मेरे शोधकार्य की मर्यादा होगी।

अनुसंघान पद्धति (Research Methods)

शोधकार्य के लिए विविध पद्धतियों की सहाय्यता ली जाती है। और इन्हीं कुछ पद्धतियों का आधार लेकर शोध कार्य पुरा तथा परिपूर्ण किया जाता है। अत: मुझे भी शोधकार्य करते समय अनुसंधान कुछ पद्धतियोंका आधार लेना जरूरी है। जैसे, आधार ग्रंथ, संदर्भ ग्रंथ, विभिन्न पत्र-पत्रिकाएँ, समाचार पत्र। साथही इंटरनेट की सुविधा का भी आवश्यकतानुसार सहयोग लिया जाएगा। अगर जरूरत पडी तो प्रश्नावली पद्धति का भी उपयोग किया जाएगा।

अनुसंधान का महत्त्व (Importance Of Research)

इस संसार में थर्ड जेंडर एक वर्ग है जिसे अलग-अलग नामों से जाना जाता है। जैसे, थर्ड जेंडर, तृतीय लिंगी, किन्नर, हिजडा तथा उयलिंगी। वर्तमान समय आधुनिकता का है, तकनीक का है, इसमें आम समाज अनेक समस्याओं से गुजर रहा है, लेकिन इससे भी ज्यादा किन्नर समाज समस्याओं से गुजर रहा है। उनका जीवन संघर्ष शुरू से अंत तक होता है। हमेशा उपेक्षाभरी नजरों का समाना करना पडता है। कईबार उनकी अस्मिता को ठेंस पहुँचायी

जाती है। समाज हो या परिवार दोनों जगह उन्हें समस्याओं का सामना करना पडता है। लेकिन आज सरकार इस थर्ड जेंडर की स्थिति को समझ रही है, उनके लिए कानून बन रहे है, कहना गलत नहीं होगा कि अब उन्हें भी सुविधा मिल रही है लेकिन यह सुविधा (लाभ) उन्हें काफी संघर्ष के बाद मिल रही है। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि परिवार, शिक्षा, तथा सरकारी नियमों की सहाय्यता से यह थर्ड जेंडर भी समाज के मुख्य प्रवाह में आ जाएगा। लेकिन जरूरत है समाज की मानसिकता बदलना, और थर्ड जेंडर को अपनाना उसी ओर एक पहल करना । अत: इसी अर्थ से २१ वीं सदी के हिंदी उपन्यासों में चित्रित थर्ड जेंडर की समस्याएँ विषय महत्त्वपूर्ण है।

अनुसंधान का प्रारूप (Tentative Chapterisation)

''२१ वीं सदी के हिंदी उपन्यासों में चित्रित थर्ड जेंडर की समस्याएँ'' इस विषय को अध्ययन की सुविधा हेतु निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित किया गया है।

प्रथम अध्याय– ''२१ वीं सदी के हिंदी उपन्यासों में चित्रित थर्ड जेंडर की अवधारणा एवं स्वरूप''

द्वितीय अध्याय– ''२१ वीं सदी के हिंदी उपन्यासों का परिचय''

तृतीय अध्याय– ''२१ वीं सदी के हिंदी उपन्यासों में चित्रित थर्ड जेंडर की पारिवारिक समस्याएँ''

चतुर्थ अध्याय– ''२१ वीं सदी के हिंदी उपन्यासों में चित्रित थर्ड जेंडर की सामाजिक समस्याएँ''

पंचम अध्याय– ''२१ वीं सदी के हिंदी उपन्यासों में चित्रित थर्ड जेंडर और मनोविज्ञान''

उपसंहार

प्रथम अध्याय : २१ वीं सदी के हिंदी उपन्यासों में चित्रित थर्ड जेंडर की अवधारणा एवं स्वरूप

थर्ड जेंडर की अवधारणा

थर्ड जेंडर समलौगिंकता संबंध तथा परिचय

थर्ड जेंडर की भाषा

थर्ड जेंडर का जीवन संघर्ष

थर्ड जेंडर निर्माण की जैविक समस्याएँ स्पष्ट करके अंत में निष्कर्ष दिया जाएगा।

द्वितीय अध्याय : २१ वी सदी के हिंदी उपन्यासों का परिचय

१. यमदीप

२. मै भी औरत हूँ

३. किन्नर कथा

४. तीसरी ताली

५. गुलाम मंडी

६. पोस्ट बॉक्स नं. २०३ नाला सोपारा

७. मैं पायल

८. जिंदगी ५०–५०

आदि प्रमुख उपन्यासों का परिचय देकर अंत में निष्कर्ष दिया जाएगा।

तृतीय अध्याय : २१ वी सदी के हिंदी उपन्यासों में चित्रित थर्ड जेंडर की पारिवारिक समस्याएँ

पारिवारिक समस्या : स्वरूप

पारिवारिक संबंधो में कटूता

पारिवारिक संबंध

भाई–बहन

पिता – पुत्र

माता – पुत्र

प्रेम की समस्या

अकेलापन

काम: थर्ड जेंडर में खुले आम चर्चा

देह व्यापार

यौन शोषण

आर्थिक अभाव

आदि समस्याओं को स्पष्ट करके अंत में निष्कर्ष दिया जाएगा।

चतुर्थ अध्याय : २१ वी सदी के हिंदी उपन्यासों में चित्रित थर्ड जेंडर की सामाजिक समस्याएँ

सामाजिक समस्या : स्वरूप

शोषण

नशाा वासनाधिनता

अस्तित्व बोध

दो पीढियों के बीच अंतर तथा संघर्ष

क्लब, पार्टी, फॅशन तथा आधुनिकता की अतिरिकता

पुलिस के अन्याय-अत्याचार

कामकाजी थर्ड जेंडर की समस्याएँ

बेरोजगारी

आरक्षण की मांग

वर्गातर्गंत अत्याचार

एड्स

जैसे समस्याओं का विश्लेषण करके अंत में निष्कर्ष दिया जाएगा।

पचंम अध्याय : २१ वीं सर्दी के हिंदी उपन्यासाों में चित्रित थर्ड जेंडर और मनोविज्ञान

मनोविज्ञान : स्वरूप

विद्रोही वृत्ति

व्यक्तितत्व का दोहरापन

अधूरा देह

घुटन एवं कुंठा

हीनताबोध

मानसिक संघर्ष

नशा और सेक्स में डूबता थर्ड जेंडर

नैतिक बंधनों का त्याग, मूल्यविघटन और थर्ड जेंडर

वंचना और दर्द से पीडित

आंगिक अभिव्यक्ति और थर्ड जेंडर

थर्ड जेंडरों के रीतिरीवाज

थर्ड जेंडर तथा उनकी प्रकृति

सज्ञा और सर्वनामों के बीच उलझता थर्ड जेंडर

थर्ड जेंडर और मानवाधिकार

थर्ड जेंडर की वर्तमान स्थिति और उनसे जुडे मुद्दे

आदि बातों को स्पष्ट करके अंत में निष्कर्ष दिए जाएगें।

अंत में उपसंहार दिया जाएगा। साथ ही परिशिष्ट के अंतर्गत संदर्भ ग्रंथ सूची दी जाएगी।

शोध–निर्देशक

डॉ. सविता चोखोबा किर्ते

शोधछात्रा

सुश्री. सरिता बाबासाहेब बिडकर